Answers to RSPL/1 (DS1)

खंड–क

1. (क) दीमक जिस लकड़ी पर लग जाती है, उसे धीरे-धीरे खोखला कर देती है, उसी प्रकार निराशा से ग्रस्त मन भी धीरे-धीरे उत्साह व उमंग से रहित होकर खोखला होता जाता है। इसी समानता के कारण निराशा को दीमक के समान बताया गया है।

(ख) निराशा मनुष्य को शारीरिक व मानसिक रूप से कमज़ोर बना देती है। वह स्वयं को टूटा हुआ महसूस करता है और ऐसा होने पर उसे छोटी-छोटी मुश्किलें भी पहाड़ की तरह दिखाई देती हैं।

(ग) आशावादी और निराशावादी व्यक्ति की सोच में धरती-आसमान का अंतर आ जाता है। आशावादी व्यक्ति को उमंग, उत्साह, उल्लास, प्रेरणा, प्रयास जैसे गुणों के कारण पहाड़ जितनी मुश्किलें भी छोटी-छोटी लगती हैं, जबकि इन गुणों से रहित होने के कारण निराशावादी व्यक्ति को जीवन की छोटी-छोटी मुश्किलें भी पहाड़ दिखाई देती हैं।

(घ) जीवन में यदि सफल होना है तो हमें आशावादी बनकर अपने मन को सदैव उमंग व उल्लास से परिपूर्ण रखना चाहिए और कभी भूले से भी निराशा को अपने मन पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

(ङ) इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस संसार में जितने भी सफल इंसान हुए हैं, उन्होंने कभी अपने ऊपर इस निराशा को हावी नहीं होने दिया।

(च) गद्‍यांश का उपयुक्त शीर्षक है– 'निराशा : एक भयंकर शत्रु'।

खंड–ख

2. **तलवार**–ततााँरा की तलवार लकड़ी की थी। (अन्य उपयुक्त वाक्य भी स्वीकार्य)

3. (क) कवि ने हास्य रस की कविताएँ सुनाई **और** खूब हँसाया।

(ख) ऐसा पहली बार हुआ है **कि** वह इस तरह निराश दिखाई दे रहा है।

(ग) एकाएक बादलों के छाते ही/छाने पर/छाने के कारण अँधेरा-सा छा गया।

4. (क) चौराहा – चार राहों का समाहार/समूह (द्‍विगु समास)

मौज-मस्ती – मौज और मस्ती (द्‍वंद्‍व समास)

(ख) युद्‍ध के लिए भूमि – युद्‍धभूमि (तत्पुरुष समास)

नौ निधियों का समाहार – नवनिधि (द्‍विगु समास)

5. (क) रजत ने अभी तक गृहकार्य नहीं **किया** है।

(ख) इस बैठक में **अनेक** लोग आएँगे।

(ग) आप इस कागज पर अपने हस्ताक्षर कर **दीजिए**।

(घ) पर्वतीय क्षेत्र **की सुंदरता मन मोह लेती है**/पर्वतीय क्षेत्र **का सौंदर्य मन मोह लेता है**।

6. (क) लोग घंटों तक अपने प्रिय अभिनेता के आने की **बाट जोहते** रहे।

(ख) आजकल गुस्सा तो जैसे लोगों की नाक पर रखा रहता है। वे ज़रा-ज़रा-सी बात पर **आग बबूला** हो जाते हैं।

(ग) परीक्षा में अच्छे अंक न मिलने पर मदन का **चेहरा मुरझा** गया।

(घ) नेताओं को गरीब जनता के दुख-दर्द से कोई मतलब नहीं होता, वे तो **अपना उल्लू सीधा करने** की ताक में रहते हैं।

खंड–ग

7. (क) 'डायरी का एक पन्ना' पाठ में डॉ. दासगुप्ता घायलों के उपचार के साथ उनके फ़ोटो खींचने का कार्य भी कर रहे थे क्योंकि ऐसा करके वे कलकत्तावासियों के मन में आज़ादी के प्रति चेतना व समर्पण के भाव को देश के सामने लाना चाहते थे और इसके साथ-साथ 26 जनवरी, 1931 को आज़ादी की वर्षगाँठ मनाते समय कलकत्तावासियों पर अंग्रेज़ों द्‍वारा ढाए गए जुल्मों को देश के सामने लाकर उस कलंक को धो देना चाहते थे, जिसके अनुसार पूरा देश यह सोच रहा था कि कलकत्ता में आज़ादी के लिए कोई कार्य नहीं किया जा रहा है।

(ख) सआदत अली अवध के नवाब आसिफ़उद्दौला का छोटा भाई तथा वज़ीर अली का चाचा था। वह अति महत्वाकांक्षी था और किसी भी कीमत पर अवध का नवाब बनना चाहता था। राज्य के नियमानुसार जब आसिफ़उद्दौला के उपरांत वज़ीर अली राजा बना तो सआदत अली कंपनी से मिल गया और कंपनी को दस लाख रुपये तथा अपनी आधी संपत्ति देकर उसने वज़ीर अली को तख़्त से हटवाया और स्वयं नवाब बन बैठा।

(ग) लेखक के ग्वालियर वाले मकान के रोशनदान में कबूतर के जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उस घोंसले में रखे दो अंडों में से एक अंडा तोड़ दिया। यह देखकर लेखक की माँ को बहुत दुख हुआ। उन्होंने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परंतु इस कोशिश में दूसरा अंडा उन्हीं के हाथ से गिरकर टूट गया। अपनी इस गलती की माफ़ी के लिए उन्होंने पूरे दिन का रोज़ा रखा। वे पूरी रात रोती रहीं और खुदा से इस गलती को माफ़ करने की गुज़ारिश करती रहीं।

(घ) वामीरो के मधुर स्वर में पिरोए गीतों को सुनकर तताँरा अपनी सुध-बुध खो बैठा था। जैसे ही गीत समाप्त हुआ, उसकी तंद्रा टूटी तथा वह बोल पड़ा—"तुमने एकाएक इतना मधुर गीत अधूरा क्यों छोड़ दिया? गाओ, गीत पूरा करो।" वह चाहता था कि गीत निरंतर चलता रहे, इसलिए गाना रुकते ही वह एकाएक बोल पड़ा।

8. 'झेन की देन' के लेखक रवींद्र केलेकर का मानना है कि भूत चला गया है और हमारे लाख प्रयासों के बावजूद हम उसे वापस नहीं ला सकते और भविष्य कैसा आकार लेगा, यह हम नहीं जान सकते। अतः भूत और भविष्य पर विचार करके हम अपने जीवन को व्यर्थ के तनावों से भर देते हैं। इसी कारण लेखक ने इन दोनों कालों को मिथ्या यानी झूठा कहा है। इसके विपरीत यदि हम पूरी निष्ठा के साथ वर्तमान में जीते हैं तो हम व्यर्थ के तनावों से दूर रहते हैं। ऐसा करके हम अपने भविष्य को एक आकार भी दे पाते हैं। अतः केवल यही काल सत्य है।

अथवा

'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक ने किताबी ज्ञान की अपेक्षा दुनियादारी के ज्ञान को श्रेष्ठ बताया है क्योंकि किताबी ज्ञान विषयगत ज्ञान तो देता है, किंतु जीवन चलाने में सहायक सिद्ध नहीं होता। जबकि दुनियादारी का ज्ञान हमें अनुभव से प्राप्त होता है, यह ज्ञान जीवन को चलाने में सहायक होता है। जीवन के बहुत से निर्णय दुनियादारी के ज्ञान से ही लिए जाते हैं। इसके लिए लेखक ने पाठ में अपने अम्मा-दादा व हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ के उदाहरण दिए हैं जो बहुत अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, किंतु अपने इसी ज्ञान के कारण वे परिवार का पालन-पोषण सही ढंग से कर सकते थे।

9. (क) कवि ने महर्षि दधीचि, राजा रंतिदेव, राजा शिवि और कर्ण आदि महापुरुषों के उदाहरणों द्वारा मानव को परमार्थ के पथ पर चलने, नाशवान शरीर का मोह न करके मानवता की भलाई का संदेश दिया है। कवि चाहते हैं कि हर मनुष्य के मन में 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' जैसी भावना रहे। वह स्वयं से पहले दूसरों का ध्यान रखे और इन महापुरुषों के समान मानवता की भलाई के लिए पुण्य कार्य करके जीवन को सार्थक बनाए।

(ख) जहाँ अन्य प्रार्थना गीतों में कवि स्वयं कुछ न करके सबकुछ ईश्वर से ही पूर्ण करने की प्रार्थना करते हैं, वहीं इस प्रार्थना गीत में कवि जीवन की विपदाओं से स्वयं दो-दो हाथ करने के लिए ईश्वर से साहस, संयम, शक्ति, विवेक तथा रोग रहित जीवन देने की प्रार्थना करता है। इन गुणों के सहारे वह प्रतिकूल परिस्थितियों से स्वयं जूझते हुए अपनी रक्षा स्वयं करने की अभिलाषा रखता है। इन कारणों से यह कविता अन्य प्रार्थना गीतों से अलग है।

(ग) 'कर चले हम फ़िदा' नामक गीत की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। इस युद्ध में अनेक वीर सैनिक शहीद हो गए थे। इसी युद्ध की पृष्ठभूमि पर 'हकीकत' फ़िल्म बनी थी। यह गीत इसी फ़िल्म के लिए लिखा गया था। आज भी यह गीत हमारी नस-नस में जोश और देशभक्ति का संचार करता है।

(घ) धरोहर का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। धरोहर हमारे पूर्वजों की निशानी है, जिसे सँभालकर रखना हमारा फर्ज़ है। 'तोप' कविता में यह बताने का प्रयास किया गया है कि यह तोप हमारी धरोहर है, जो हमें इतिहास की याद दिलाती है। यह हमें उन गलतियों की याद दिलाती है जिनके कारण हमें गुलामी का दंश झेलना पड़ा। ये तोप हमें जागरूक करती है, ताकि हम अपने इतिहास से सीख ले सकें।

10. सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा रचित इस कविता में चित्रात्मक भाषा का बड़ा ही सुंदर व मनभावन प्रयोग किया गया है। कविता के आरंभ से ही प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कवि ने वर्षा में उसके पल-पल रूप बदलने का सुंदर चित्रण किया है। पाठक आरंभ से ही वर्षा के कारण प्रकृति में आने वाले बदलावों को अपनी आँखों के सामने से गुज़रता हुआ महसूस करता है। प्रकृति का पल-पल बदले हुए रूपों में दिखाई देना, मेखलाकार पर्वत पर नन्हे-नन्हे पुष्पों का खिलना, तालाब का दर्पण के रूप में दिखाई देना, वर्षा से झरनों की झर-झर ध्वनि का बढ़ जाना और ऐसा लगना कि मानो वे पर्वत के यश का गुणगान कर रहे हों, मोतियों की लड़ियों के समान झरनों के झागयुक्त जल का नीचे गिरना, बादलों से आकाश व पहाड़ आदि के ढक जाने पर ऐसा लगना कि मानो पहाड़ बादलों के पंख लगाकर आकाश में उड़ गया हो आदि दृश्य पाठक की आँखों के सामने आकर उसे अभिभूत कर देते हैं। निस्संदेह, यह कविता चित्रात्मक भाषा के कारण पाठक पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ती है।

अथवा

मीरा के पदों में राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त उनके पदों में गुजराती, पूर्वी, पंजाबी व खड़ीबोली के शब्दों का माधुर्य भी विद्यमान है। उनकी भाषा में लयात्मकता है तथा उन्होंने अलंकारों का बड़ा सहज प्रयोग किया है।

मीरा के मन में अपने आराध्य के प्रति अटूट श्रद्धा थी। उनकी दास्य भक्ति भावना में अपने प्रभु के प्रति एक समर्पण है। वे उनके प्रेम में पूरी तरह बैरागी हैं। पहले पद में द्रोपदी, प्रह्लाद व गजराज जैसे भक्तों के उदाहरण देकर उन्होंने प्रभु से अपनी पीड़ा हरने की विनती की है तथा दूसरे पद में प्रभु की दासी बनकर समर्पण के साथ उनके दर्शनों की अभिलाषा को पूरा करने के लिए लोकलाज का भय तक त्यागकर आधी रात के समय यमुना के पवित्र तट पर जाने की बात कही है। सार रूप में कहा जा सकता है कि दोनों पद उनके हृदय की गहरी भक्ति भावना का परिचय देते हैं।

11. (क) हरिहर काका को लेकर गाँववाले दो वर्गों में बँट गए थे। एक वर्ग सोचता था कि हरिहर को ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर देनी चाहिए। ऐसे वर्ग में वे लोग थे जो किसी न किसी रूप में ठाकुरबारी से जुड़े थे। दूसरा वर्ग चाहता था कि खून का रिश्ता सबसे बड़ा होता है, इसलिए हरिहर को ज़मीन भाइयों के नाम कर देनी चाहिए। इस वर्ग में वे लोग शामिल थे, जिनके घरों में हरिहर काका जैसे लोग पल रहे थे।

(ख) पीटी साहब बड़े ही क्रूर स्वभाव के अध्यापक थे। वे ज़रा-सी गलती होने पर बच्चों की चमड़ी उधेड़ देते थे, पूरे वर्ष पढ़ाते समय वे बहुत सख्त बने रहते थे, किंतु जब कभी वे स्काउट परेड करवाते और बच्चे उनके संचालन में कुशलतापूर्वक कार्य करते, तो वे खुश हो जाते थे और उनके मुँह से अनायास ही 'शाबाश' शब्द निकल जाता था। चूँकि यह शब्द उन्हें बड़ी मुश्किलों से सुनने को मिलता था। इसलिए उन्हें यह 'शाबाश' फ़ौज के तमगों-सी लगती थी क्योंकि फ़ौज का तमगा भी आसानी से प्राप्त नहीं होता।

खंड–घ

12. (क) **सांप्रदायिक सौहार्द/हिंदू-मुस्लिम एकता : राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता**

सांप्रदायिक सौहार्द का अर्थ सभी संप्रदायों के बीच आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना है। इसका बहुत महत्त्व है। सभी धर्मों के लोग जब मिलजुलकर रहते हैं, तो उस अमन-चैन के वातावरण में जन्नत का अहसास होता है। इससे समाज और देश में खुशहाली आती है तथा देश के दुश्मन अपने नापाक मंसूबों में कामयाब नहीं हो पाते। परस्पर प्रेम और भाईचारे का यह माहौल इंसानियत की खुशबू से सराबोर होता है। इससे राष्ट्रीयता को मज़बूती मिलती है। इसके विपरीत जिस समाज, जिस देश में सांप्रदायिक सद्भावना की जगह दंगे-फ़साद होते हैं, वहाँ लोग भय के वातावरण में जीते हैं। सभी एक-दूसरे से सहमे रहते हैं। ऐसे माहौल में देश का सच्चा विकास नहीं हो पाता और प्रतिवर्ष जान-माल का भारी नुकसान होता है। सच्चे अर्थों में, भारत अपनी विविधता में एकता और सांप्रदायिक सौहार्द व भाईचारे के कारण जाना जाता है। इसकी ये विशेषताएँ बनी रहनी चाहिए। यहाँ की गंगा-जमुनी संस्कृति को किसी की नज़र न लगे, बस हृदय से यही कामना हर भारतीय को करनी चाहिए।

(ख) **युवाओं में बढ़ती हिंसावृत्ति**

'हिंसावृत्ति' अर्थात दूसरों को चोट पहुँचाने का संवेदनशून्य आचरण। ऐसा दूषित व्यवहार, जिसमें मनुष्य संयम की सीमाओं को लाँघकर क्रोध के वशीभूत दूसरों को शारीरिक एवं मानसिक हानि पहुँचाने का कृत्य करने में किसी प्रकार की लज्जा एवं ग्लानि का अनुभव नहीं करता। यह स्वभाव मानवीय नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे लक्षण पशुओं एवं दानवों में पाए जाते हैं, सच्चे मानवों में नहीं, परंतु इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि ये बातें जानते हुए भी आज के समाज में हिंसात्मक गतिविधियाँ बढ़ती चली जा रही हैं। युवा वर्ग पश्चिमीकरण और भौतिकवाद की चाह में स्वार्थी होता जा रहा है। वह भोगवादी संस्कृति पर विश्वास करता है। आस्तिकता उसके लिए विचारों का दकियानूसीपन है और मानसिक शांति के लिए परम सत्ता में ध्यान लगाना, समय की बर्बादी। उसकी ऐसी मानसिकता ने आज उसे केवल अपने सुख-भोगों तक सीमित कर दिया है। वह अपने आप को झुकाना नहीं जानता। नीतिपरक बातें उसे कान में विष घोलती प्रतीत होती हैं और हिंसक व ऊलूल-जुलूल बातें उसे मनमोहक लगती हैं। इसी कारण वह बात-बात पर आग बबूला होकर स्वयं को शक्तिसंपन्न दिखाना चाहता है। छोटी-छोटी बातों के लिए अंगारे उगलना या मारपीट पर उतारू हो जाना आज के युवाओं के लिए सामान्य-सी बात है। आज जिस प्रकार युवा हिंसक होते जा रहे हैं, उसे देखकर कहा जा सकता है कि अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता बापू की आत्मा यह दृश्य देखकर अवश्य ही विकल हो जाती होगी। इसके समाधान के लिए माता-पिता को बच्चों को समय देना होगा तथा विद्यालय में नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाकर, सिनेमा, टी०वी० आदि पर हिंसात्मक दृश्यों पर रोक लगाकर ही युवाओं में बढ़ती इस दानवी प्रवृत्ति को रोका जा सकता है।

(ग) **चंद्रयान-2 : अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की नई पहचान**

चाँद हमेशा से ही मानव जाति के लिए अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। हमेशा से ही वैज्ञानिकों और पूरी मानव जाति को चाँद के बारे में जानने की उत्कट जिज्ञासा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पृथ्वी के सबसे करीब इस उपग्रह को पृथ्वी से बाहर जीवन के लिए काफ़ी उपयुक्त माना जाता रहा है। यही वजह है कि अनेक देशों की अंतरिक्ष एजेंसियाँ समय-समय पर चाँद पर अपने यान भेजती रही हैं। भारत की प्रमुख वैज्ञानिक संस्था इसरो भी इस कार्य में पीछे नहीं है। इसरो ने अंतरिक्ष में लगातार नई-नई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। 22 अक्टूबर, 2008 को चंद्रयान-1 का सफल प्रक्षेपण करने के पश्चात् चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण 22 जुलाई, 2019 को दोपहर बाद 2 बजकर 43 मिनट पर किया गया। यह दुनिया का पहला मिशन है, जिसमें लैंडर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा। इस मिशन के मुख्य उद्देश्यों में चंद्रमा पर पानी की मात्रा का अनुमान लगाना, उसकी ज़मीन, उसमें मौजूद खनिजों एवं रसायनों तथा उनके वितरण का अध्ययन करना और चंद्रमा के बाहरी वातावरण की ताप-भौतिकी गुणों का विश्लेषण करना है। उल्लेखनीय है कि चंद्रमा पर भारत के पहले चंद्र मिशन चंद्रयान-1 ने वहाँ पानी की मौजूदगी की पुष्टि की थी। चंद्रयान-2 में किसी अन्य विदेशी एजेंसी की मदद नहीं ली गई है। अतः यह पूर्णरूपेण एक भारतीय मिशन है, जिसकी कुल लागत करीब 978 करोड़ रुपये है। इसरो की एक अलग पहचान स्पेस मिशंस को किफ़ायती लागत में पूरा करने के लिए भी है। इसरो ने मंगलयान का सफल प्रक्षेपण तो मंगल पर बनी हॉलीवुड मूवी 'द मार्सियन' से भी कम लागत में किया था। विश्वास है कि इसरो नित्य नई ऊँचाईयों को छूकर राष्ट्र का नाम आलोकित करता रहेगा।

13. परीक्षा भवन

अ०ब०स० स्कूल

क०ख०ग० नगर

दिनांक–05/03/20xx

सेवा में

श्रीमान संपादक

दैनिक भास्कर

अ ब स नगर

विषय : जल विभाग की लापरवाही से प्रतिदिन हज़ारों लीटर पानी की बर्बादी के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके समाचारपत्र के माध्यम से जल विभाग के आला अधिकारियों का ध्यान टूटे पाइप के कारण नगर में प्रतिदिन हो रही हज़ारों लीटर पानी की बर्बादी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे नगर के यमुना विहार क्षेत्र में पिछले पाँच दिनों से टूटे पाइप से हज़ारों लीटर पानी की बर्बादी हो रही है। इससे सेक्टर में जल की आपूर्ति भी प्रभावित हो रही है। देश में इस समय जल-संरक्षण अभियान ज़ोरों से चल रहा है। 'बूँद-बूँद में जीवन', 'जल है तो कल है' जैसे नारे लगाने वाले जल विभाग की कथनी व करनी में अंतर है। स्थानीय नागरिकों के उसी दिन सूचना देने के बावजूद अभी तक पाइप की मरम्मत कर पानी की बर्बादी नहीं रोकी गई है।
आपसे अनुरोध है कि कृपया इस संदर्भ में एक समाचार अपने प्रतिष्ठित समाचारपत्र में प्रकाशित करके जल विभाग के आला अधिकारियों तक यह बात पहुँचाने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए सभी नगरवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद
भवदीय
क०ख०ग०

अथवा

परीक्षा भवन
अ०ब०स०
क०ख०ग० नगर
दिनांक–05/03/20xx
सेवा में
श्रीमान थानाध्यक्ष
अ०ब०स० नगर
विषय : क्षेत्र में बढ़ती चेन झपटमारी और छेड़छाड़ की घटनाओं पर रोक लगाने के संबंध में।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके क्षेत्र का एक जागरूक निवासी हूँ तथा आपका ध्यान क्षेत्र में बढ़ती चेन झपटमारी और छेड़छाड़ की घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।
आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे नगर में पिछले दो सप्ताह से चेन झपटमारी और छेड़छाड़ की घटनाएँ बहुत अधिक बढ़ गई हैं। बिना नं. प्लेट वाली पल्सर बाइक पर सवार दो बदमाशों ने कल सुबह टहलने निकली एक युवती के गले से चेन झपट ली और बेखौफ़ होकर इस घटना के पंद्रह मिनट बाद ही उन्होंने सेक्टर में ही एक अन्य महिला से भी चेन झपटमारी की। क्षेत्र में कई दिनों से छेड़छाड़ की घटनाएँ भी बढ़ती जा रही है। जब तक पुलिस विभाग का गश्ती दल सक्रियता नहीं दिखाएगा, तब तक इन आपराधिक घटनाओं पर रोक नहीं लगेगी।
आपसे अनुरोध है कि कृपया समुचित कार्रवाई करते हुए हम क्षेत्रवासियों को भयमुक्त वातावरण प्रदान कर कृतार्थ करें। इस कार्य के लिए सभी नगरवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद
भवदीय
क०ख०ग०

14.

सार्वजनिक सूचना
(नाम परिवर्तन)

दिनांक : 15-03-20xx
मैं विवेक सक्सेना सुपुत्र श्री केसरी सक्सेना निवासी अ ब स नगर ने अपनी पुत्री रिया सक्सेना का नाम बदलकर सौम्या सक्सेना रख दिया है। अतः भविष्य में मेरी बेटी को सौम्या सक्सेना नाम से ही जाना जाए।
धन्यवाद
विवेक सक्सेना

विशेष– नाम परिवर्तन की सूचना में दिनांक के बिना भी सूचना स्वीकार्य होती है क्योंकि अख़बार में पड़ी दिनांक को ही सूचना की दिनांक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

अथवा

रेज़ीडेंट्स वैलफ़ेयर समिति

सेक्टर-22, अ ब स नगर

आवश्यक सूचना

(वार्षिक सभा का आयोजन)

दिनांक : 18-05-20xx

सभी समिति सदस्यों एवं सेक्टर के गणमान्य निवासियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 20/05/20xx (रविवार) को सुबह 9 बजे सामुदायिक केंद्र में रेज़ीडेंट्स वैलफ़ेयर समिति की वार्षिक सभा का आयोजन किया जा रहा है। सभा में बढ़ती आवारा पशुओं की आवाजाही व सामुदायिक केंद्र में राष्ट्रीय पर्वों पर आयोजनों के स्तर में सुधार जैसे विषयों पर बातचीत की जाएगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है। कृपया समय पर पधारकर कृतार्थ करें।

सधन्यवाद

निवेदक

अध्यक्ष रेज़ीडेंट्स वैलफ़ेयर कमेटी

सेक्टर-22, अ ब स नगर

15. **नव्या** – कैसी हो सौम्या?

सौम्या – मैं ठीक हूँ नव्या। तुम बताओ, तुम कुछ उदास दिख रही हो?

नव्या – हाँ, बच्चों की जंकफ़ूड की आदत से परेशान हूँ।

सौम्या – सच कह रही हो। आजकल बच्चे हर दिन बर्गर, सैंडविच, मैगी, पिज़्ज़ा यही सब खाना पसंद करते हैं।

नव्या – (दुखी होते हुए)– सौम्या, आज तो हद ही हो गई। मेरा बेटा सैंडविच की ज़िद में लंच लेकर ही नहीं गया।

सौम्या – नूतन तुम्हें भी सैंडविच बना देना चाहिए था फिर स्कूल से लौटने के बाद उसे उसकी ज़िद के लिए समझाना चाहिए था।

नव्या – वह ज़िद करने लगा तो मुझे भी गुस्सा आ गया।

सौम्या – अब इस समय बच्चे के बारे में ज़्यादा मत सोचो। वह किसी दोस्त के साथ लंच कर लेगा।

नव्या – आजकल टी वी पर विज्ञापन देख-देखकर बच्चे इन चीज़ों को खाने की ज़िद करते हैं पर ज़िद के साथ-साथ हमें इनकी सेहत भी तो देखनी है।

सौम्या – सेहत का तो ध्यान ज़रूर रखना है, पर इस मुद्दे पर इन्हें प्यार से समझाना ही सही होगा।

नव्या – तुम सही कह रही हो, सौम्या।

सौम्या – मैंने अपने बच्चों को बड़े प्यार से समझाया। पता है, अब वे केवल हफ़्ते में एक बार ही जंकफ़ूड के लिए कहते हैं।

नव्या – काश! मेरे बच्चों की समझ में यह बात आ जाए।

सौम्या – ज़रूर आ जाएगी, बस तुम प्यार से समझाना और उनकी ज़िद पर कभी गुस्सा नहीं होना।

नव्या – (स्वीकृति में सिर हिलाते हुए)–सौम्या, मैं आज से तुम्हारी विधि भी प्रयोग करके देखूँगी।

अथवा

मम्मी – कविता बेटे, तुमने आज ये कैसे कपड़े पहने हैं!

कविता – मम्मी, ये कपड़े नए ज़माने के हैं।

मम्मी – पर इतने तंग कपड़े पहनकर बाहर निकलना, बिल्कुल भी ठीक नहीं है और वैसे भी इन कपड़ों में हर आदमी की नज़रें आपके ऊपर जैसे गड़ी रहती हैं।

कविता – मम्मी, यह नया ज़माना है। अब आपके ज़माने की तरह कपड़े नहीं पहने जाते और वैसे भी मुझे अपनी सहेली की बर्थ डे पार्टी में जाना है।

मम्मी – बेटा, ज़माना कोई भी हो। हमें रहन-सहन, खान-पान और पहनावे में शालीनता बरतनी चाहिए। ऐसा करने से हमें कभी कोई नुकसान नहीं हो सकता।

कविता – मम्मी, आप समझती क्यों नहीं हैं कि इस ड्रेस में मैं बड़ी कूल लग रही हूँ।

मम्मी – कविता बेटे, तुम भारतीय पहनावे में भी बहुत कूल यानी सुंदर लगती हो और मुझे पूरा भरोसा है कि मेरी बेटी मेरी बात ज़रूर मानेगी।

कविता – ठीक है माँ, अगर आप कहती हैं, तो मैं दूसरा सूट पहन लूँगी।

मम्मी – यह हुई न अच्छे बच्चों वाली बात!!

16.

बिकाऊ है

एक ब्लैक पल्सर बाइक केवल 50 हज़ार में
पुरानी पर बिल्कुल नई जैसी...
ऐसा मौका न गँवाएँ
केवल 50 हज़ार में पल्सर चलाएँ

विशेषताएँ–
बेहतरीन माइलेज
2018 मॉडल
इंजन 180 सीसी
दो वर्ष के बीमा सहित

संपर्क करें– 9879xxxxxx

अथवा

ज़िंदगी को हाँ
नशे को ना

नशा आपसे आपकी खुशियाँ छीन लेता है
बदले में केवल बदहाली ही देता है

अब चलें नशे के अँधियारे से ज़िंदगी के उजाले की ओर

नशामुक्ति केंद्र अ०ब०स० नगर द्वारा जनहित में जारी